

फली तपस्या (१२१)

सुखदेवी मैया लाई हूं आजु वाधाई।
साकेत सहिचरड़ी तेरे घर प्रगटी श्री खण्डि नाम धराई
कोट जन्म की फली तपस्या मातु भई मन भाई॥

अजरु अमरु होवे बालकु तेरो यह आशीश सुणाई
फूलनि वर्षा भई गगन से देव हर्षि गुण गाई॥

सिंधु देश सौभाग्य देन हित रीझे श्री रघुराई
सूफी कुल के भए उज्यारे प्रेम भक्ति दृढाई॥

धर्म राज सम धर्म नीति के पालन में निपुणाई
सिंधु समान गम्भीर गुणनि में शारदा थाह न पाई॥

श्री राम कथा की वर्षा करके लोक विशोक बणाई
दीन दुखियों की करंहि पालना दीनहि दान अघाई॥

हरी नाम की तुमुलि धुनी से देवै गगन गूंजाई
कलि युग में सति युग की करणी दैहइं प्रघट लखाई॥

श्री रोचल पुण्य पुंज की बेली फूली फली सुहाई
श्री आत्माराम की गोद भरी है गरीबिड़ी बलिजाई॥